4

किताब पढ़ने की ललक

रजनी सिंह*

प्राथमिक शालाओं में शिक्षण के दौरान अकसर कई ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जो बच्चों के मनोविज्ञान और स्कूली व्यवस्था में विद्यमान स्थितियों के द्वंद्व को आपके सम्मुख उजागर करती हैं। हमारे विद्यालयों में प्रायः नन्हे पाठकों के पढ़ने के लिए बाल साहित्य की उपलब्धता नाम मात्र ही है। अतः किसी विद्यार्थी द्वारा किताब घर से कुछ रोचक किताबों को चुपचाप ले लेना भी बहुत सामान्य घटना हो सकती है। ऐसी स्थिति में कक्षा में किताब घर का बनना बच्चों के लिए खासे उत्साह की बात हो सकती है। किताब घर बनाने के बाद बच्चों में आए कुछ ऐसे परिवर्तन, जिन्होंने एक शिक्षिका होने के नाते कई ऐसे पहलुओं को उजागर किया, जो बच्चों के मन में किताबें पढ़ने की ललक और स्वानुशासन के संबंधों को समझने में सहायक हैं। प्रस्तुत लेख में स्कूल शिक्षण के दौरान सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में होने वाले कुछ अनुभवों के पन्नों से एक अनुभव प्रस्तुत है, जो बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति व अनुशासन के बीच के संबंध को समझने में सहायक रहा।

यह बात उन दिनों की है जब मुझे दिल्ली के एक सरकारी स्कूल में पढ़ाने का मौका मिला था। इस दौरान मुझे कक्षा तीन में पढ़ाने के लिए भेजा गया था। उस दिन मैं बहुत उत्साहित थी कि आज कक्षा में अंततः पुस्तकालय का कोना और पुस्तक, दोनों की व्यवस्था हो गई है। बच्चों ने जब मेरे थैले से निकलती रंग-बिरंगी, अलग-अलग चित्रों वाली और रोचक शीर्षक; जैसे–आलू कचालू, रूपा हाथी, पिग्गी की उडान, किसने खाए मालपुए, छुमकी ने चिट्ठी डाली, कजरी गाय फिसल पट्टी पर, मरियल भूत, आसमान गिरा, चूहों को मिली पेंसिल व पिटारा जैसी ढेरों किताबें देखी तो वे सब भी हैरान और उत्साहित थे कि आखिरकार इतनी किताबें उनकी कक्षा में किसलिए लाई गई हैं। हालाँकि पिछले दिनों में मेरे और उनके बीच बनी दोस्ती और अपनेपन से वे संभवतः यह अंदाजा लगा चुके थे कि यह सभी किताबें उनकी कक्षा के लिए ही हैं। परंतु वे इस दुविधा में भी थे कि भला मैडम उनके लिए इतनी सारी किताबें क्यों लायेंगी? इन सभी दुविधाओं और सवालों के चलते सबने अपने सवालों का पिटारा खोल दिया "मैडम जी आप इतनी सारी किताबे क्यों लाई हैं?" "क्या यह सभी हमारे लिए हैं?" "आप इन्हें कहाँ रखेंगी?" "हम सबको एक-एक

* *शोधार्थी*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

मिलेगी क्या?" "नहीं! यह मैडम उनको देंगी जो अच्छा काम करता है!" "मैडम आप यह हमको भी देंगी हमें तो पढ़ना आता ही नहीं है।" "मैडम यह स्कूल के लिए लाई हैं।" "यह किताबें मैडम उसको देंगी जो मैडम को परेशान नहीं करेगा।" "मैडम को, प्रिंसिपल मैडम ने यह किताबें दी होंगी रखने के लिए हमें इन्हें संभाल के रखना होगा।" सवालों की यह बौछारें थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। किताबों को एक कोने में रखते हुए मैंने कहा, "अब मैं आप सभी के सवालों का जवाब देती हूँ।" इतना सुनकर सभी शांत हो गए एकचित होकर अपने अनुमान को सच होने का दावा और कशमकश मन में लिए मेरी ओर देखने लगे। यह सभी किताबें हमारी कक्षा के लिए हैं। आज हम अपनी कक्षा के एक कोने में अपने लिए एक किताब घर बनाएँगे। जहाँ यह सभी किताबें रखी जाएँगी और आप सभी बच्चे इस काम में मेरी मदद करेंगे। बच्चे यह सुनकर बहुत खुश हुए और पूरे उत्साह से काम में जुट जाने को तत्पर हो गए। कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो यह सोचकर कि वे पढ़ना नहीं जानते हैं तो वे क्या मदद करेंगे। संभवतः वे कुछ ऐसा सोचकर शांत खड़े थे। मैंने सभी बच्चों को जो जहाँ खड़ा था वही से चार-चार के समूह में बाँटा, चूँकि अब समूह में बँट जाने को लेकर लड़ाइयाँ तुलनात्मक रूप से कम हो गई थी तो ज़्यादा विवाद खड़ा नही किया गया और सभी समूह में बँट कर खड़े हो गए और अपने समूह को मिलने वाले काम के बारे में सुनने लगे। मैंने सभी को बताया कि यह किताबें अब से हमारी कक्षा में ही रहेंगी और हम कक्षा का एक कोना इन्हें रखने के लिए तय करेंगे। जल्दी ही हमने वह कोना तय कर लिया। तय किये गए कोने से सटी खिड़की से दूसरी खिड़की तक एक मज़बूत रस्सी बाँधी गई। इतना काम होने के बाद मैंने बच्चों से कहा, "अब हम इन किताबों को वहाँ टाँग देंगे और बची किताबों को एक डेस्क लगा कर छोटी से बड़ी के क्रम में लगा देंगे। दो समूह का काम है कि वह बँधी रस्सी पर किताबों को रखेंगे। एक समूह सभी पुस्तकों के नाम मुझे बताएगा, जिसे मैं एक कॉपी में लिखूँगी। एक समूह एक दूसरी कॉपी में सभी बच्चों के नाम लिखेगा और कुछ कॉलम बनाएगा।" जिसका मैंने ब्लैक बोर्ड पर एक खाका बना कर बच्चों को दिखाया। जो इस प्रकार है —

बच्चे का नाम	ली गई किताब का नाम	किताब ले जाने की तारीख	किताब लौटने की तारीख	पढ़ी गई किताबों की संख्या
मोमिन	रूपा हाथी	12 नवंबर 2011	20 नवंबर 2011	1

अब हर समूह ने अपना काम शुरू कर दिया था और मैं भी बच्चों के साथ इस काम में जुट गई। लगभग एक से डेढ़ घंटे की मेहनत के बाद हमारी कक्षा का किताब घर बनकर तैयार हो गया था। पूरा काम हो जाने के बाद सबने मिलकर एक बार अपने किताब घर को मुस्कुराते हुए निहारा। इसके बाद मैंने कक्षा में सभी को कक्षा लाइब्रेरी के प्रयोग के कुछ सामान्य नियम बताये जैसे — कक्षा का हर बच्चा कोशिश करे कि वह एक किताब रोज़ घर ले जाये और पढ़े। साथ ही जब भी कक्षा में खाली समय मिले तो भी वह अपनी पसंद की किताब उठाकर पढ़े और पढ़ने के बाद उसे वही रख दे। जो बच्चे अपने घर पढ़ने के लिए किताबें

ले जाना चाहते हैं वह छुट्टी से आधा घंटा पहले मेरे पास आएँ और अपने द्वारा ली गई किताब का नाम रजिस्टर में लिखवाएँ, जो अभी बनाया है। एक किताब को कोशिश करें कि पाँच से छ: दिन में वापिस कर दें एक बच्चा एक बार में केवल दो ही किताबें घर लेकर जाए, ताकि सभी बच्चों को किताबें मिल सके। किताबों को फाड़ें नहीं क्योंकि अब यह सभी किताबें आप सभी की हैं और आप को ही इन्हें सँभाल कर रखना है। इस पर पेंसिल न चलाएँ आदि-आदि। इन सामान्य नियमों के साथ एक और व्यवस्था की गई, जिसमें कक्षा के सभी बच्चों को किताब घर के कोने में उनकी ऊँचाई के बराबर के चार्ट पर प्रत्येक सप्ताह कुछ ज़रूरी जानकारी लिखनी है जैसे — चार्ट पर बने एक कॉलम में अपना नाम लिखना है और उसने कुल कितनी किताबें पढ़ी हैं उनकी संख्या लिखनी है। सप्ताह के अंतिम दिन के अंतिम घंटी में वह बच्चा जिसने सबसे अधिक किताबें पढ़ी होंगी वह कक्षा को उन पढ़ी गई किताबों के बारे में कुछ रोचक बाते बताएगा/बताएगी, जिसके लिए कक्षा में उसे कुछ उपहार स्वरूप दिया जायेगा जैसे उसे कक्षा का मॉनिटर बनाना, दो से अधिक किताबों को घर ले जाने की अनुमति देना आदि-आदि। इस तरह हमारा किताब घर अब चालू हो चुका था। इस किताब घर में सभी के स्तरों को ध्यान में रखकर किताबों को लाया गया था। जैसे जो बच्चे तीसरी कक्षा के अनुसार नहीं पढ़ पाते थे उनके लिए तस्वीरों वाली किताबें थी, जिनमें लिखित सामग्री कम थी। बिग बुक व कुछ किताबें ऐसी भी थी जो तीसरी कक्षा के स्तर से एक स्तर अधिक थी। किताब घर के प्रयोग करने में शुरुआती समय में सभी बच्चों को कुछ-कुछ दिक्कतें हुई जैसे — जिनको लिखना नहीं आता वह अपनी जानकारी बोर्ड पर कैसे लिखें?, कुछ बच्चे किताब ले जाते हैं, लेकिन उसको रजिस्टर में दर्ज़ नहीं कराते, वापिस करना भूल जाते हैं, कुछ बच्चों को एक ही समय पर एक ही किताब चाहिए होती थी तो झगड़े की स्थितियाँ भी बनी, परंतु आपसी बातचीत और निरंतर संवाद से इन सभी समस्याओं के विकल्प तलाशे जाते थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे बच्चों को अपनी आपसी समस्याओं के विकल्प स्वयं ढूँढ़ने की आदत बन चुकी थी। धीरे-धीरे हमारे किताबघर की चर्चा स्कूल के बाकी बच्चों तक भी पहुँच रही थी। उन्हीं दिनों की बात है एक दिन मैं कक्षा में बच्चों को गणित विषय के अंतर्गत आँकड़ों की संकलन संकल्पना पर बात कर रही थी। तभी मेरी कक्षा की एक बच्ची मेरे पास आकर कहती है, "मैडम कुछ बच्चे खिड़की के बाहर खड़े हैं और छड़ी से रस्सी पर टंगी किताबों को उतार रहे हैं।" जब मैंने खिड़की की ओर देखा तो वहाँ कोई भी नहीं था। बच्ची ने कहा कि मैडम वो बाहर ही हैं। यह बात सुन मैं बच्ची और कक्षा के कुछ अन्य बच्चे स्कूल के पिछले हिस्से में गए, जोकि बहुत ही उबड़-खाबड़ जगह थी। कक्षा से निकला छोटा-मोटा कूड़ा भी अकसर वही फेंक दिया जाता था। जब हम स्कूल के उस पिछले हिस्से पर पहुँचे तो हमने देखा कि कक्षा चार के कुछ बच्चे उस किताब को, जो उन्होंने हमारी कक्षा की खिड़की से निकाली थी, खुशी से देख रहे हैं और पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। उनमें से एक ने मुझे देखा और कहा — "मैडम आ गयी।"

मुझे सामने पाकर वे सभी बुरी तरह घबरा गए और कहने लगे —

"मैडम-मैडम जी हमने चोरी नहीं की है हम तो बस ऐसे ही देख रहे थे।"

एक बच्चा दूसरे की ओर इशारा करते हुए बोला — "मैडम इसने कहा था, हम तो मना कर रहे थे, हमने तो कहा था चोरी करना पाप होता है।"

मैंने उनसे पूछा — "आप कौन सी क्लास के बच्चे हो?"

बच्चे इस बात का जवाब न देकर केवल एक ही बात कहते रहे कि — मैडम हमने चोरी नहीं की है।

"मैडम सॉरी अब नहीं करेंगे (प्लीज)।"

"हमें हमारी मैडम(कक्षा अध्यापिका) के पास लेकर मत जाना।"

मैंने उन बच्चों से कहा कि – आप यह किताब खिड़की से इस तरह निकल कर क्यों पढ़ रहे थे? बच्चों ने कहा कि मैडम हमारा कहानी की किताब पढ़ने का बहुत मन था इसलिए आपकी क्लास के बच्चे कह रहे थे कि आप बहुत अच्छी किताबें लाई हैं उनके लिए। इस पर मैंने कहा, "तो आपने मुझ से क्यों नहीं कहा कि यह किताबें आपको भी चाहिए?"

बच्चे — "मैडम हमें लगा कि आप अपनी क्लास के लिए यह किताबें लाई हैं तो आप हमें नहीं देंगी।"

मैंने उनसे कहा कि अगर बाकी क्लास के बच्चे भी इसी तरह यहाँ से किताबें ले जाने लगे तो क्या होगा?

"मैडम सब किताबें ले जायेंगे।"

आगे मैंने उन्हें समझाते हुए कहा, "और इस तरह फिर ये किताबें किसी को भी पढ़ने के लिए नहीं मिल पाएँगी न मेरी क्लास के बच्चों को न ही आपको! अब बताइए कि क्या किया जाये?

सब चुपचाप खड़े हैं।

"बताइए?"

"मैडम अगर हम आप से आकर यह किताब ले तो आप दे देंगीं?"

उस समय तो मैने उन्हें यह कह दिया कि हाँ! यदि आप मुझ से पूछ कर ले जाएँगी/ जाएँगे तो मैं आपको मना नहीं करुँगी। यह कहते हुए मैंने बहुत ही नैतिक सा लगने वाला भाषण उन्हें दे डाला कि आज आप चुपचाप किताब ले रहे हैं कल बाकी और बच्चे भी इसी तरह से किताबें ले जाएँगे यह 'अच्छी' बात नहीं है। इसलिए आप को जब भी किताबें चाहिए होंगी तब आप मुझ से आकर बात करेंगे और तब किताबें ले कर जाएँगे। इस घटना के बाद मुझे लगातार यह लगता रहा कि क्या वाकई इस तरह के *एक्ट* चोरी कहे जाने चाहिए? तीन-चार साल तक मनोविज्ञान विषय को पढ़ने के बाद फ्रॉयड के द्वारा दी गई *आईडी* (ID) मनो वेग की संकल्पना और कोह्लवर्क की *सोशल कांट्रेक्ट ओरिएंटेशन*(नैतिक विकास की वह अवस्था जहाँ नियमों को लचीला मान लिया जाता है और बच्चे नियमों के विकल्प ढूँढ़ने लगते हैं) की स्टेज मुझे बच्चों के व्यवहार में चित्रित होती दिख रही थी। बच्चों में किसी भी ऐसी चीज़ के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है जो उन्हें बहुत रोचक लग रही है, परंतु वह उनके पास नहीं है लेकिन औरों के पास है। यही बात इस घटना के संदर्भ में भी है। जिस स्कूल में मैं पढ़ा रही थी उस स्कूल में प्राथमिक शाला के बच्चों के लिए किसी भी प्रकार

की लाइब्रेरी या पाठ्य पुस्तकों से इतर पठन सामग्री की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। जबकि इस अवस्था के बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि को विकसित करने व अलग-अलग किस्म के पाठों में रुझान बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि उनके आस-पास पठन सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता हो।

परंतु, व्यवस्थागत खामियों के चलते अकसर हमारे स्कूल इस तरह का माहौल अपने नन्हे पाठकों को नहीं दे पाते हैं। इसलिए बच्चे पढ़ने के समृद्ध अवसरों से वंचित रह जाते हैं। ऐसी स्थितियों में इस तरह की घटना का होना जहाँ स्कूल की एक कक्षा में इस तरह की रोचक किताबें दिख रही हैं जिनके शीर्षक और रंग-बिरंगें चित्र बच्चों को अपनी और खींच रहे हैं, स्वाभाविक है कि बच्चे उन किताबों को पाना चाहेंगे। परंतु, दूसरी शिक्षिका से पूछने का डर और मन में रंग-बिरंगी किताबों को पाने की तीव्र इच्छा के द्वंद्व में उन तमाम नैतिक दबावों पर विजय पाई जा सकती है जो यह कहते हैं कि उन बच्चों को वह किताबें नही लेनी चाहिए। अगले दिन जब मैं स्कूल में गई तो मैंने उन बच्चों को फिर से अपनी कक्षा में बुलाया और कक्षा के किताब घर के लिए बने कुछ नए नियमों को अपनी कक्षा में दोहराया। इस बार के नियम थे कि हमारे किताब घर की किताबें अब बाकी दूसरी कक्षा के बच्चे भी ले सकते हैं जिसके लिए हमने तीस मिनट के लंचब्रेक का समय निर्धारित किया और कहा स्कूल में अन्य कक्षा के बच्चे भी हमारी कक्षा में आकर यह किताबें पढ़ सकते हैं। इस चर्चा में सामूहिक रूप से मैंने बच्चों को यह समझाने का प्रयास किया कि पढ़ना और कहानी की किताबें सबको अच्छी लगती है इसलिए यह सबको मिलनी भी चाहिए, साथ ही उन्हें यह भी कहा की चूँकि यह आप सभी बच्चों की किताबें हैं इसलिए आप सबकी ज़िम्मेदारी है कि आप सभी इन्हें सँभाल कर रखें। इस घटना के बाद से कक्षा में बहुत कुछ बदल गया था जैसे — कुछ बच्चे लंचब्रेक में बाहर खेलने के बजाए कक्षा में बैठ कर अपनी पसंद की किताबें पढ़ते थे। कुछ किताबें जो फट गई थी उन्हें जोड़कर चिपकाने का कार्य भी बच्चे स्वयं करते थे। अब बच्चे स्वयं ही एंट्री रजिस्टर में उस पुस्तक की एंट्री कर देते थे, जो वह घर ले जाते हैं और देर होने पर मुझे सूचित कर देते थे कि वह किताब समय पर नहीं लौटा पाए हैं पर जल्दी ही वापिस कर देंगे। कक्षा की यह घटनाएँ जब सोचती हूँ तो लगता है बच्चे भीतर से ही अनुशासित होते हैं ज़रूरत बस इतनी है कि उन पर भरोसा किया जाए।

संदर्भ

लौरा, ई. बर्क. 1989. *चाइल्ड डेवलपमेंट*. इलिनाइस यूनिवर्सिटी, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका.